१० - सही और गलत को क्या हुआ?

1

क्या सचमुच कोई अन्तर पड़ता है?

2

क्या आपने ध्यान दिया है कि शहरों में किस प्रकार से अपराध बढ़ रहे हैं?
यह कई आश्चर्यजनक रूपों में दिखाई देता है।

3

एक दिन एक आदमी पुलिस मुख्यालय के अन्दर तेज चलता हुआ आया। वह बहुत नाराज था। उसके घर में कोई घुस आया था और बहुमूल्य चीजों को लेकर चला गया था। वह चोर की एक झलक देखने में सफल हुआ था और पुलिस से मांग की कि इस के लिए कुछ करे। इसलिए दफ्तर पदाधिकारी उसे लूटेरों के फोटो के ढ़ेर के पास ले गए और उस आदमी को चित्र देखकर चोर को पहचानने के लिए कहा।

4

अचानक अधिकरी ने कहा रूक जाइए, उसने एक पन्ने को रोकते हुए उस व्यक्ति के चेहरे की और ध्यान से देखा और कहा, ये आप हैं! पुलिस अधिकारी ने कहा "आपकी गिरफ्तारी के लिए वारेन्ट है!" हुआ यह कि वह क्रोधित व्यक्ति जो न्याय की मांग करता पुलिस के दफ्तर में आया थ, स्वंय ही अपराधी घोषित किया गया!

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

5

अपराध और हिंसा सब ओर है। वहाँ भी जहाँ आप आशा नहीं कर सकते काम करने की जगह पर, कारखानों में गावों में शहर में और नगर में।

6

देशों में दंगा, क्रान्ति और डाका डालना आम बात है रास्ते सुरक्षित नहीं हैं। हत्या, अपहरण, आतंकवाद, बमकाण्ड, लूटना, बलात्कार, चोरी गबन करना और सरकारी भ्रष्टाचार दुनिया के सभी देशों में प्रत्येक दिन सूचित किया जाता है।

क्यों अपराध बढ़ रहा है?

अव्यवस्था के अभूतपूर्व बढ़ोतरी के पीछे क्या है?

हमारी दुनिया को क्या हो गया है?

7

पश्चिमी देशों में और दुनिया के सुसम्पन्न देशों में एक नई पीढ़ी के नवयुवक प्रश्न कर रहे हैं, सच्ची बातों में भी संदेह कर रहे हैं, और चुनौती दे रहे हैं। परमेशवर वयस्कों को अपने बच्चों के लिये आदर्श भूमिका के लिए पुकार रहा है। बच्चे अपने आस पास के समाज के व्यवहार की नकल उतार रहे हैं। उनके आध्यात्मिक उदाहरण कौन होंगे?

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

8

पिता अपने काम में और कर देने में चोरी करते हैं, माताएँ गर्भपात कराती है और दोनो माता पिता एक दूसरे को धोखा देते हैं।

9

बच्चे यह सब देखते हैं! टूटता हुआ घर अप्रिय निशान छोड़ जाता है!यदि माता पिता बच्चों को सही और गलत की शिक्षा नहीं देगें तो कौन देगा? निश्चित है कि माता पिता स्कूल पर इतना बड़ा उत्तरदायित्व नहीं छोड़ सकते !बहुत सारे स्कूल नैतिक जीवन के महत्व को नहीं सिखाते हैं। एक साधारण विश्वास जगह ले रहा है कि हम लोग बाईबिल के नैतिक स्तर से कहीं आगे बढ़ गये हैं!

10

आज भी कुछ कलीसियाएं यह सिखा रही हैं कि परमेश्वर का गलत और सही स्तर अब और लागू नहीं होता है।

11

वे कहती हैं कि उसकी आज्ञाओं को समाप्त कर दिया गया है,

12

या वे हमसे अब और सम्बधित नहीं है,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

13

या इन्हें मानना असम्भव है,

14

परिणामतः बहुत से लोग अपनी मनमानी कर रहे हैं और समाज टूटते हुए घर, अनियन्त्रित बच्चे, उग्र अपराधों की फसल काट रहा है।

15

(मूलपाठ : होशे ८ : ७)

होशे भविष्यवक्ता के शब्दों में, "वे वायु बोते हैं, और वे बवण्डर लेवेंगे।"

16

लेकिन प्रश्न पूछा जाना चाहिए कि कौन निश्चित करता है कि स्थिति सही है या गलत? क्या नैतिक लोगों की नैतिकता कभी -कभी अपूर्ण नहीं होती? अगर हमारे बाहर गलत और सही का कोई स्तर नहीं है, तो हम उचित - अनुचित का अन्तर खो बैठते हैं।

17

(मूलपाठ : नीतिवचन १६ : २५)

परन्तु बाईबिल हमें याद दिलाती है कि हमलोग गलत और सही की पहचान नहीं कर सकते। "ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा देख पड़ता है, परन्तु उस के अन्त में मृत्यु ही मिलती है।"

नीतिवचन १६ : २५

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

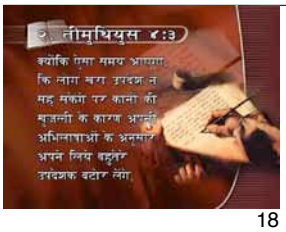

18

(मूलपाठ : २. तीमुथियुस ४ : ३)

प्रेरित पौलुस ने भविष्यवाणी की थी : "क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे,

19

क्योंकि कानों की खुजली के कारण अपने लिए बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे;

20

और अपने कान सत्य से फेरकर कथा कहानियों पर लगाएंगे।"

२. तीमुथियुस ४ : ३, ४

21

हाँ, दुःख की बात यह है कि हम पाते हैं के नियमों को हटा देने से हम लोगों को स्वतंत्रता नहीं मिलती! सही और गलत के स्तर को हटा दें तो व्यवस्था आ जाएगी।

22

यदि आप यातायात की बत्ती और संकेत हटा दें तो रास्ते और राजपथ पर अव्यवस्था आ जाएगी।

23

नियम क्या है?

क्या हम लोग जान सकते है, सही या गलत क्या है?

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

24

बहुत समय पहले परमेश्वर ने हमलोगों को अपराध मुक्त समाज के लिए नुस्खा दिया था।
और यदि हमेशा उसको पालन करते रहे तो अपराध कभी न जन्म लेगा!
पृथ्वी पर कहीं भी सभी लोग सुरक्षित और खुश रहेंगें।

25

(मूलपाठ : निर्गमन २० : २)
जब इस्राएलियों ने सीनै पर्वत के नजदीक डेरा डाला था परमेश्वर उनसे मिलने के लिए आया और उस ने कहा "कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया हूँ।"
निर्गमन २० : २

26

(दृश्य)
परमेश्वर ने स्वंय को उनके दासत्व से छुड़ानेवाला पहचान कराया। वही एक है जिसने उनके सामने लाल सागर पर रास्ता बनाया। वह उनका बचाने वाला था। दूसरे शब्दों में वह कह रहा था, "मैं आपके लिये चिंता करता हूं आप मुझ पर विश्वास कर सकते हैं।"

27

तब उसने अपनी पवित्र आज्ञा को बोला कि लोगों को शान्ति और सुरक्षा से जीने के लिए ज्ञान मिलें जिससे वह क्या सही है और क्या गलत है जाने।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

28

चलिए जल्दी से दस आज्ञाओं की सूची को देखें जो उसने सीनै पर्वत पर कहीं

(मूलपाठ : दस आज्ञा निर्गमन २० से)

"तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना....

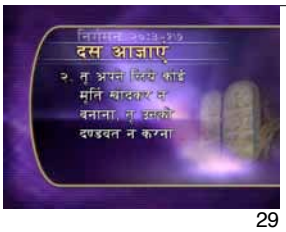

29

"तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, तू उनको दण्डवत न करना....

30

"तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना.....

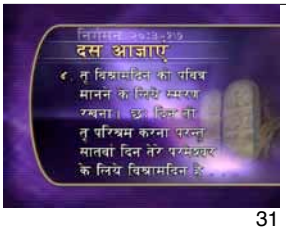

31

"तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करना परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर के लिये विश्रामदिन है.....

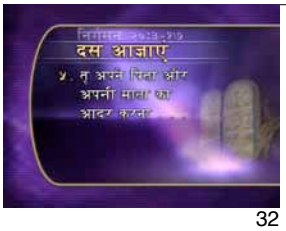

32

"तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना.....

33

"तू खून न करना.....

34

"तू व्यभिचार न करना।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

35

"तू चोरी न करना।

36

"तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।

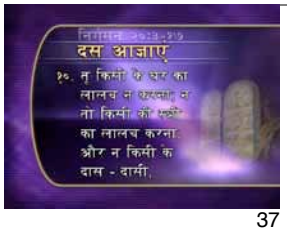

37

"तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की स्त्री का लालच करना; और न किसी के दास -दासी,

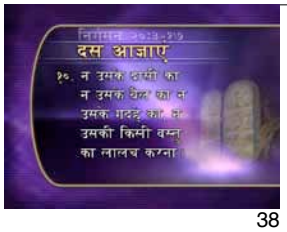

38

न उसके दासी का न उसके बैल का न उसके गदहे का, न उसकी किसी वस्तु का लालच करना।"
निर्गमन २० : ३ -१७

39

(दृश्य)
जैसे इस्राएली लोग सुन रहे थे वे बहुत अधिक प्रभावित हुए यदि वह परमेश्वर की इच्छा थी तो वे निश्चय करेंगे !

40

फिर भी, यह जानते हुए कि मनुष्य कितना भूलक्कड़ हो सकता है, परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को दो पत्थर की स्लेटों पर अपनी उंगलियों से लिखा :

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

41

(मूलपाठ : निर्गमन ३१ : १८)

"जब परमेश्वर मूसा से सीनै पर्वत पर ऐसी बातें कर चुका,

42

उसने साक्षी देनेवाली पत्थर की दोनों तख्तियाँ दी,

43

परमेश्वर की अपनी उंगली से लिखी हुई पत्थर की तख्तियाँ दी।"

निर्गमन ३१ : १८

44

जो भी, यह पहली बार था कि परमेश्वर ने लिखित रूप में अपनी आज्ञा दी थी, ये आज्ञाएँ अनन्तकाल से विद्यमान थीं। सीनै पर्वत से बहुत पहले, या आदम -हव्वा से पहले, अनन्त, न बदलने वाला उचित का स्तर परमेश्वर के स्वर्गीय शासन का मूल आधार था।

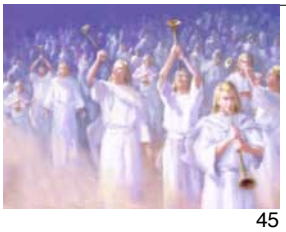
45

सचमुच में, स्वर्गदूत भी परमेश्वर की आज्ञा द्वारा शासित किये जाते हैं। उनको चुनने दिया गया था कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें या इन्कारकर उसके विरुद्ध विद्रोह करें।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

46

शैतान और उसके स्वर्ग- दूतों ने अपनी मनमानी करने का और अपना नियम बनाने का निर्णय लिया। और यही विद्रोह उन्हें स्वर्ग से बाहर निकलने का कारण बना।

47

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १२ : ७ -९)
बाइबिल बताती है, "फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले और अजगर और उसके दूत उससे लड़े,

48

परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिये फिर जगह न रही।

49

और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना साँप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमानेवाला है;

50

पृथ्वी पर गिरा दिया गया और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।"

प्रकाशितवाक्य १२ : ७ - ९

लेकिन वहाँ पर स्वर्गदूत थे जिन्होंने परमेश्वर के पीछे चलने का निश्चय किया और उसकी आज्ञा के साथ विश्वस्त रहे।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

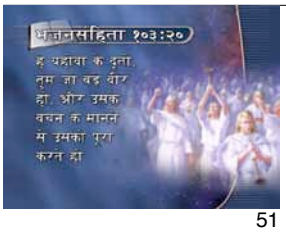

51

(मूलपाठ : भजनसंहिता १०३ : २०)

"हे यहोवा के दूतों, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो।"

भजनसंहिता १०३ : २०

52

अदन की बारी में आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञा का ज्ञान था, इसलिये उन्होंने पाप करने के बाद लज्जा और अपने को दोषी महसूस किया।

53

और जब कैन क्रोधित हुआ क्योंकि परमेश्वर ने हाबिल की भेंट को स्वीकार किया और उसकी नहीं, परमेश्वर ने उससे पूछा,

54

(मूलपाठ : उत्पत्ति ४ : ६, ७)

"तब यहोवा ने कैन से कहा, तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है?

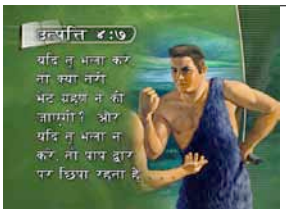

55

यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है।"

उत्पत्ति ४ : ६, ७

परमेश्वर के कानून का नियंत्रण हर समय होना चाहिये क्योंकि हमें बताया गया है कि,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

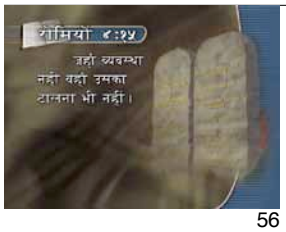

56

(मूलपाठ : रोमियों ४ : १५)

"....जहाँ व्यवस्था नहीं वहाँ उसका टालना भी नहीं।"

रोमियों ४ : १५

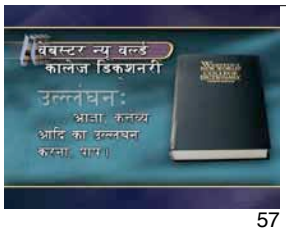

57

वेबस्टर न्यू वर्ल्ड कालेज डिक्शनरी कहती है,

"उल्लघंन.... आज्ञा, कर्त्तव्य आदि का उल्लघंन करना, पाप...."

58

सीनै पर परमेश्वर से आज्ञा देने से पहले इब्राहीम इन आज्ञाओं को जानता और मानता था।

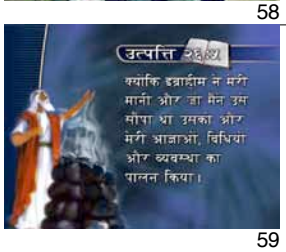

59

(मूलपाठ : उत्पत्ति २६ : ५)

परमेश्वर ने कहा था वह इब्राहीम को आशीष देगा और उसके वंश को, "क्योंकि इब्राहीम ने मेरी मानी और जो मैंने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं, विधियों और व्यवस्था का पालन किया।"

उत्पत्ति २६ : ५

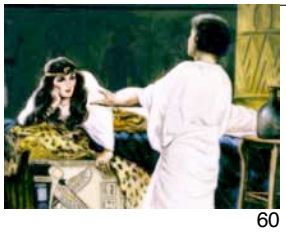
60

जी हाँ, सीनै से बहुत पहले, यूसुफ की संवेदनशील अन्तरात्मा ने पोतीफर की पत्नी द्वारा लाई परीक्षा का सामना करने में उसकी सहायता की, यह कह कर,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

61

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३१ : १)

"उसने तुझे छोड़, जो उसकी पत्नी है; मुझसे कुछ नहीं रख छोड़ा।

62

सो भला, मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यों- कर बनूँ?"

उत्पत्ति ३१ : १

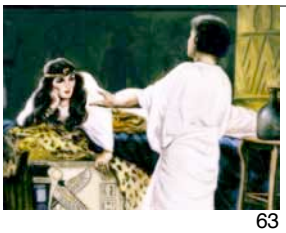
63

यूसुफ जानता था कि व्यभिचार करना पाप था; वह परमेश्वर के सही और गलत के स्तर को जानता था। उसने दृढ़ता से निर्णय लिया कि वह परमेश्वर की पवित्र आज्ञा को नहीं तोड़ेगा!

64

(दृश्य : ४ सेकेन्ड)

इस्राएलियों को बताया गया था कि परमेश्वर की सेवा करें और आज्ञा माने पर मिश्र में जब वे अपने कष्टकर बन्दी- स्थिति में थे, वे परमेश्वर के नियम को भूल गये।

65

निर्गमन के बाद, सीनै पहुँचने से कुछ -सप्ताह पहले, परमेश्वर ने मूसा को झिड़का क्योंकि इस्राएली सब्त के दिन मन्ना जमा करने की कोशिश करके उसके नियमों को तोड़ रहे थे।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

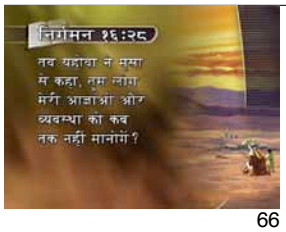

66

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : २८, ३०)

"तब यहोवा ने मूसा से कहा, तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नहीं मानोगें?"

67

"लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया।"

निर्गमन १६ : २८, ३०

आप देख सकते हैं, सीनै से पहले चौथी- आज्ञा की पहचान हो चुकी थी।

68

हाँ, परमेश्वर का नियम दुनिया के लिये अनन्त काल से सही स्तर का है। और वास्तव में, क्या हमें आश्चर्य होना चाहिये कि परमेश्वर के राज्य में उसके नियम है?

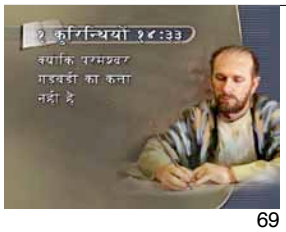

69

(मूलपाठ : १ कुरिन्थियों १४ : ३३, ४०)

प्रेरित पौलुस ने लिखा: "क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का कर्त्ता नहीं है....."

70

"पर सारी बातें सभ्यता और क्रमानुसार की जाएं।"

१ कुरिन्थियों १४ : ३३, ४०

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

71

बिना नियम के सुव्यवस्थित सरकार नहीं रह सकती। नियम के बिना सद्भावपूर्ण, खुशहाली, सुरक्षित समाज काम नहीं कर सकता।

प्रकृति के अपने नियम हैं, यहाँ तक कि बच्चे बिना नियम के खेल नहीं खेल सकते!

72

(मूलपाठ : रोमियो २ : १३)

बाइबिल कहती है: "क्योंकि परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुनने वाले धर्मी नहीं,

73

पर व्यवस्था पर चलनेवाले धर्मी ठहराए जांएगे।"

रोमियो २ : १३

आप देख सकते है कि परमेश्वर की आज्ञाओं को केवल जानना ही पर्याप्त नहीं, उनको मानना भी आवश्यक है।

74

(मूलपाठ : यूहन्ना १४ : १५)

यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

यूहन्ना १४ : १५

वास्तव में, यीशु पुराने नियम को दुहरा रहे थे, प्रेम की नींव सब आज्ञाओं के मानने में है।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

75

(मूलपाठ : मत्ती २२ : ३७ - ४०)

".....तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।

76

बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है।"

77

तब यीशु ने कहा, "उसी के समान यह दूसरी भी है: कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।

78

ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार है।"

मत्ती २२ : ३७ - ४०

79

यदि हमलोग सचमुच में पूरे मन, दिमाग, और आत्मा, से परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो

80

हमलोग निश्चित रूप से उस प्रेम को पहली चार आज्ञाओं को मानकर जतायेंगे:

81

हमारे जीवन में परमेश्वर पहले स्थान पर होगा।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

82

हमारी उपासना केवल उसी के लिये हो

83

हमलोग उसके पवित्र नाम को आदर और सम्मान देंगे

84

प्रत्येक सब्त को उनके साथ भेंट करने के लिये हमलोग उत्सुक रहेंगे

85

और यदि हम अपने मनुष्यों से अपने जैसा प्रेम करते हैं तो हम अवश्य :

86

अपने माता - पिता को आदर और सम्मान देंगे

87

जीवन को महत्व देगें

88

नैतिकता बनाये रखेंगे

89

दूसरों की सम्पत्ति का आदर करेंगे

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

90

एक -दूसरे के साथ रिश्ते में ईमानदार रहेंगे।

91

जो वस्तु दूसरों की है उस का लालच न करेंगे

92

आँकड़े बताते हैं कि लोगों के व्यवहार के नियत्रंण के लिए ३५० से अधिक कानून बनाये गये हैं।

93

लेकिन केवल दस आज्ञाओं में, परमेश्वर ने मनुष्य के हर आचरण को सम्मिलित कर लिया है। केवल परमेश्वर ही ऐसे आदर्श और सम्पूर्ण नियम लिख सकता था। बाईबिल बताती है कि:

94

(मूलपाठ : भजनसंहिता १९ : ७)

"यहोवा की व्यवस्था खरी है वह प्राण को बहाल कर देती है।

भजनसंहिता १९ : ७

95

(मूलपाठ : भजनसंहिता १९ : ११)

"उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है।"

भजनसंहिता १९ : ११

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

96

बाइबिल का ज्ञाता आगस्ट स्ट्रान्ग ने लिखा है: "नियम ही परमेश्वर की प्रकृति की प्रतिलिपि है।"

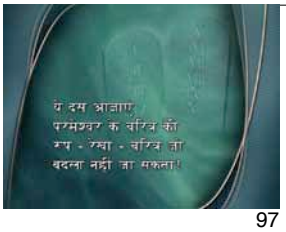

97

आज हम कह सकते हैं, "यह दस आज्ञाएं परमेश्वर के चरित्र की रूप -रेखा -चरित्र जो बदला नहीं जा सकता!"

98

आप देख सकते हैं, परमेश्वर के नियम में थोड़ी -बहुत बदलाहट, आदर्श की अपेक्षा कम का कारण बन जायेगी।

आदर्श नियम होने के कारण, उसे कभी भी बदला नहीं जा सकता।

99

(मूलपाठ : लूका १६ : १७)

ये सच्चाई है जब यीशु ने कहा : "आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है।"

लूका १६ : १७

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

100

लेकिन आप कहते हैं, "मैंने हमेशा महसूस किया है कि दस -आज्ञाओं ने मेरी खुशी पर रोक लगा दी है - एक प्रकार से मुझे घेर कर रखा है।" परमेश्वर नहीं चाहता कि उसका नियम लोगों के लिये बोझ बन जाये या उसकी खुशी पर रोक लगा दे।

101

इसके विपरीत, परमेश्वर की इच्छा है कि उसके नियम हमें दुःख और दोष से, कवच बन कर दीवार के समान सुरक्षित रखें। उसका इरादा है कि उसके नियम सभी के लिये स्वतत्रंता और हर तरफ सुरक्षा सुनिश्चित करें।

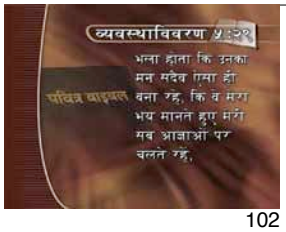

102

(मूलपाठ : व्यवस्थाविवरण ५ : २९)
परमेश्वर ने कहा, "भला होता कि उनका मन सदैव ऐसा ही बना रहे, कि वे मेरा भय मानते हुए मेरी सब आज्ञाओं पर चलते रहें,

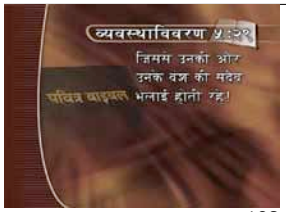

103

जिससे उनकी और उनके वंश की सदैव भलाई होती रहे! "
व्यवस्थाविवरण ५ : २९

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

104

जिस प्रकार हमलोग पुल और पर्वत के रास्ते पर खतरे से अपने को बचाने के लिये रक्षा -पटरी बनाते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर ने हमें अपने नियम दिये हैं कि जीवन के रास्ते पर हमें सुरक्षा और मार्गदर्शन मिले।

105

(मूलपाठ : रोमियों ३ : २०)
लेकिन परमेश्वर ने लोगों को अपना नियम दिया इसका दूसरा कारण है,
"...व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है।"
रोमियों ३ : २०

106

(मूलपाठ : रोमियों ७ : ७)
जिस प्रकार पौलुस ने कहा, "..वरन् बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता।

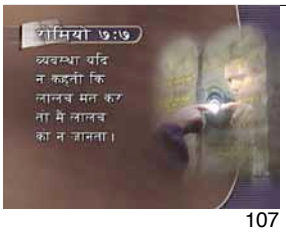

107

व्यवस्था यदि न कहती कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता।"
रोमियों ७ : ७

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

108

एक राजकुमारी की कहानी कही गई है। उसको उसकी प्रजा द्वारा यह विश्वास दिलाया गया कि वह सबसे सुन्दर स्त्री है। एक दिन एक व्यापारी उसके गाँव में आया और उसे एक दर्पण बेच गया। जब उसने अपने आप को दर्पण में देखा तो अपनी ही तस्वीर से डर गयी और दर्पण को पटक कर टुकड़े - टुकड़े कर दिया।

109

परमेश्वर की आज्ञा दर्पण की तरह है, और जब हमलोग राजकुमारी की तरह उसमें देखते है, राजकुमारी की तरह हमलोग जो देखते हैं तो उससे हम खुश नहीं होंगे,

110

लेकिन आज्ञा को नष्ट करने से या नकारने से हमारी स्थिति बदल नहीं जायेगी।

111

आज्ञा हमारे पाप को दिखाती है!
यदि हम परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उसकी शिक्षा का पालन करें तो खुशहाली और दोषरहित जीवन में उसके नियम हमारी मदद के लिये मार्ग- दर्शन के समान है।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

112

आज्ञा, पाप को वश में करने और दोष को दूर करने के लिये हमें शक्ति नहीं दे सकती।

बीते दिनों में जो पाप हमने किये हैं उसे मिटाने के लिये हमलोग भविष्य में अच्छाई को किसी भी परिमाण में कर सकते हैं, पर वह मिटेगा नहीं?

तब हमलोग किस प्रकार क्षमा पा सकते हैं? आज्ञा तोड़ने की सजा, जो मृत्यु है, उससे हम कैसे बच सकते हैं?

113

अदन की बारी के फाटक पर ही परमेश्वर ने बलि की वेदी की स्थापना की एक स्मृति - चिन्ह जो स्मरण कराये कि आज्ञा नहीं मानने से मृत्यु होती है - या तो अनाज्ञाकारी की या एक निर्दोष प्रतिनिधि की।

परमेश्वर की योजना में मनुष्य को बचाने के लिए एक मेम्ने को भेंट करना था जो पापी के विश्वास को दिखलाता है।

114

यह परमेश्वर का आदम को यह समझने में मदद का प्रयास थी कि आज्ञा तोड़ने की मांग को संतुष्ट करने के लिये निर्दोष परमेश्वर के पुत्र को मरना है। मसीह, परमेश्वर का मेम्ना, लोगों की सजा को अपने ऊपर लेगा और मृत्यु को भोगेगा।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

115

आप देख सकते हैं, आज्ञा किसी को पाप से बचा न सकी।

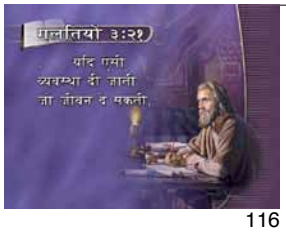

116

(मूलपाठ : गलतियों ३ : २१)

प्रेरित पौलुस कहते हैं, "यदि ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे सके,

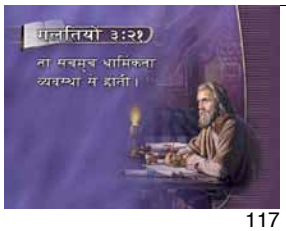

117

"तो सचमुच धार्मिकता व्यवस्था से होती। "गलतियों ३ : २१ यह आज्ञा से नहीं कि क्षमा और उद्धार मिले - यह परमेश्वर का अनुग्रह है।

मसीह के बलिदान से ही हम लोगों को अनन्त जीवन मिल सकता है।

118

(मूलपाठ : रोमियों ६ : २३)

"क्योंकि, पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

रोमियों ६ : २३

आज्ञा पालन से उद्धार नहीं पाया जा सकता।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

119

(मूलपाठ : इफिसियों २ : ८, ९)

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है,

120

न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।"

इफिसियों २ : ८, ९

121

यदि हम अनुग्रह द्वारा बचाये जाते हैं, तो क्या आज्ञा का उल्लंघन करने वाले जीवन बिताने के लिए स्वतंत्र होंगे? कभी - नहीं!

122

(मूलपाठ : रोमियों ६ : १२)

पौलुस ने लिखा है: "सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें , कि अनुग्रह बहुत हो?

123

"कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गये तो फिर आगे को उसमें क्योंकर जीवन बिताएं?"

रोमियों ६ : २

उद्धार उनके लिये है जो पाप से बचना चाहते हैं और परमेश्वर के राज्य के भागीदार बनना चाहते हैं।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

124

ऐसे लोग है जो विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का नियम मिटा दिया गया है। कुछ क्षण के लिये ऐसा सोचें।

125

यदि आज्ञा नहीं है, तो पाप नहीं है, क्योंकि 'पाप' आज्ञा को तोड़ने से होता है।"

126

यदि आज्ञा नहीं है, तो हमें अनुग्रह नहीं चाहिए। अनुग्रह परमेश्वर के प्रेम से भरी दया है जब हम परमेश्वर के नियम को तोड़ते हैं।

127

यदि हमें अनुग्रह नहीं चाहिये तो हम क्रूस के बिना रह सकते है।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

128

यदि क्रूस की आवश्यकता नहीं है तो निश्चित तौर पर हमें उद्धारकर्ता नहीं चाहिये। यदि हम आज्ञा के बिना भी रह सकते हैं तो हम, पाप, अनुग्रह, क्रूस और उद्धारकर्ता के बिना भी रह सकते हैं हमें वैसा उद्धारकर्त्ता चाहिये जो हमारे पाप के ऋण को चुकाने के लिये अपने अनुग्रह द्वारा बचाने के लिये क्रूस पर मरा, क्योंकि हमने उसकी आज्ञा को तोड़ा हैं। यह सुसमाचार है। अनुग्रह परमेश्वर की आज्ञा के बिना नहीं रह सकता है। परमेश्वर के अनुग्रह से हम परमेश्वर के नियम को मानने की इच्छा रखते हैं।

129

यदि एक कैदी मरने की प्रतीक्षा कर रहा है

130

और उसे क्षमा मिलती है और वह स्वतंत्र कर दिया जाता है, तो क्या इसका अर्थ यह है कि वह अनाज्ञाकारी जीवन जी सकता है? अपनी इच्छापूर्ति कर सकता है? कभी नहीं।

131

क्योंकि उसे क्षमा किया गया था, उसे पहले से कहीं अधिक उस देश के नियमों को कायम रखने के लिये वचन -बद्ध होना चाहिए।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

132

विशेष बात यह है कि परमेश्वर की आज्ञा हमारे पापों को दिखाती है और उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता समझाती है। जैसे हम मसीह को अपने उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करते हैं वह हमें क्षमा प्रदान करता हैं और अपनी आज्ञा पालन करने के लिये शक्ति देता हैं, क्योंकि उन्होंने यह प्रतिज्ञा की है:

133

(मूलपाठ : इब्रानियों ८ : १०)

"... मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में ड़ालूंगा और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा...."

इब्रानियों ८ : १०

134

यदि आप कुछ करने के लिये उत्सुक हैं तो वह कार्य आसान बन जाता है, क्या ऐसा नहीं है? और यही परमेश्वर की प्रतिज्ञा है उन लोगों के लिए जो उसकी आज्ञा को मानते हैं। वह अपनी व्यवस्था को उनके हृदय पर लिखेगा जिससे वे पालन करने से प्रेम करेंगे।

135

(दृश्य)

केवल यही एक उपाय है जिससे लोग परमेश्वर की आज्ञा मानकर उसके पीछे चल सकेंगे। क्योंकि मसीह अपने पिता से प्रेम रखने के कारण उसकी आज्ञाओं का पालन कर सके थे।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

136

(मूलपाठ : यूहन्ना १५ : १०)

उसने कहा, "मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।"

यूहन्ना १५ : १०

137

(मूलपाठ : यूहन्ना १४ : १५)

और यीशु ने हम लोगों से कहा है कि उनकी आज्ञाओं का पालन कर उनके प्रति अपना प्रेम दिखायें : "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

यूहन्ना १४ : १५

138

प्रेम और परमेश्वर की आज्ञा - पालन का महानतम प्रदर्शन एक ठण्डी अंधेरी रात में एक पुराने जैतून के पेड़ के नीचे हुआ था। परमेश्वर के पुत्र के चेहरे से लहू की बूदें टपक रही थीं जब उन्होंने यह प्रार्थना की,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

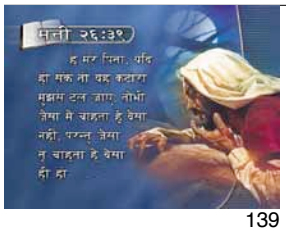

139

(मूलपाठ : मत्ती २६ : ३९)

" .... हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझसे टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो..."

मत्ती २६ : ३९

मनुष्यों का भाग्य तराजू पर लटक रहा था - दोषी दुनिया बचायी जाय या बरबाद हो जाय।

140

क्या यह युवा गलीली जीवन की इच्छा तथा मानविक आकांक्षाओं को त्याग कर क्रूस पर अपनी बलि दे सकेगा?

वे अपने मस्तक से पसीने को पोछते हुए कह सकते थे : "पापी को अपने पाप की सजा स्वंय भुगतने दो।"

141

या फिर वे हमारे लिये क्रूस को उठा सकते थे। उन्होंने निर्णय किया और हमारे पापों के कारण प्राण त्याग दिए। उन्होंने लहू बहाया जिससे हम क्षमा किए जाँए। उन्होंने हमारी मृत्यु सही ताकि हम सदा उनके साथ रह सकें।

142

चूंकि मसीह ने हमारे पापों का मुल्य चुकाया, हम इसी समय उनके बलिदान के द्वारा क्षमा प्राप्त कर सकते हैं।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

143

कलवरी पहाड़ी पर वह पुराना क्रूस उस मुल्य की अविस्मरणीय समृति है जिसे परमेश्वर ने पापी मनुष्य को बचाने और तोड़े गए नियम के दावे को सन्तुष्ट करने के लिए चुकाया।

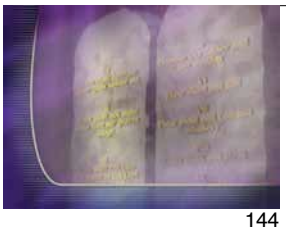
144

यदि परमेश्वर का नियम समाप्त या बदला जा सकता, तो यीशु को मरने की आवश्यकता नहीं होती। तब कलवरी भी अनावश्यक हो जाता।

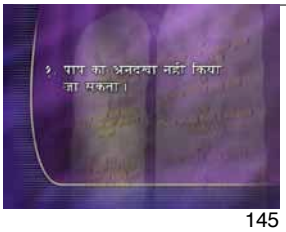

145

परन्तु परमेश्वर पापी मनुष्य के पापों को अनदेखा नहीं कर सकता था!

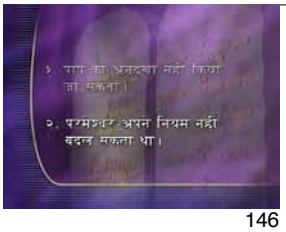

146

वह अपने नियम नहीं बदल सकता था।

147

इसलिए पापी मनुष्य को एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता थी और उसके प्रेम के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हमारे बदले मरने के लिए अपने एकलौते पुत्र को दे दिया!"

148

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : १६)
"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

149

ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

यूहन्ना ३ : १६

150

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उन लोगों का वर्णन करती है जो यीशु के दूसरे आगमन में उनसे मिलने और उनके साथ घर जाकर उस स्वर्गीय नगर में अनन्त जीवन बिताने के लिए तैयार हैं।

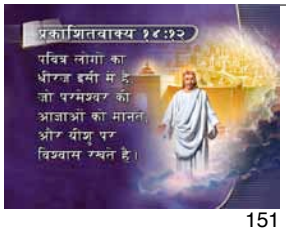

151

(मुलपाठ : प्रकाशित वाक्य १४ : १२)

परमेश्वर उनके विषय में यह कहता है: "पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं।"

प्रकाशितवाक्य १४ : १२

152

(मूलपाठ : प्रकाशित वाक्य १४ : १४)

१४ वें पद में परमेश्वर कहता है, "और मैंने दृष्टि की, और देखा, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

153

जिस के सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हंसुआ है।"

पृथ्वी की कटनी के समय प्रभु के आगमन का यह वर्णन है।

154

महान भविष्यवाणी में यीशु ने यूहन्ना को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में कलीसिया के इतिहास के विषय में बताया, वह कहते है कि पृथ्वी पर परमेश्वर की शेष कलीसिया के अंतिम सच्चे भाग का इस प्रकार वर्णन है :

155

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १२ : १७)

"और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से लड़ने गया

156

जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं।"

प्रकाशितवाक्य १२ : १७

157

बाइबिल की अन्तिम पुस्तक में आप इसका वर्णन पाते हैं!

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

158

परमेश्वर के लोग अपने सृष्टिकर्त्ता और अपने उद्धारकर्त्ता से इतना अधिक प्रेम करते हैं कि वे वही करना चाहते हैं जो वह कहता और इच्छा करता है। वे उसकी इच्छा का पालन करके उसके प्रति अपने प्रेम को दर्शाते हैं। वे स्वीकार करते हैं कि इसकी इच्छा उसके नियमों में सम्मिलित है। उन्होंने ईमानदारी से उत्तर दिया कि उनके पापों से उनको बचाने के लिए केवल एक ही था जिसने बहुत अधिक किया। अपने हाथों को आगे बढ़ाकर यीशु बुला रहे हैं। "आओ!"" वह अब भी हमें बुला रहे हैं! वह हमें उसके लिए जीने की शक्ति देना चाहते हैं।

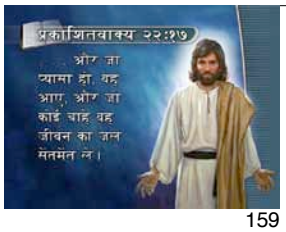

159

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य २२ : १७)

वे हमारे पापों को धोना चाहते हैं। वे अब भी हमें बुला रहे हैं!

"..... और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले।"

प्रकाशितवाक्य २२ : १७

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

160

बहुत बड़े शहर के एक उपनगर में एक प्रचारक एक घर में भेंट करने गया। उस घर की महिला नम्र स्वभाव की थी परन्तु उसने दृढ़ता से कहा: "मुझे बाइबिल या मसीहियत में रुचि नहीं है -- बिलकुल नहीं है", "परन्तु यदि आप किसी शाम फोन करेंगे तो आप को पता चलेगा कि मेरे पति इसके विषय में और अधिक सीखने के बहुत इच्छुक हैं। मैं सचमुच चाहूंगी कि आप वापस आए और उनसे मिलें।" वह प्रचारक एक शनिवार की शाम को वापस आया। क्योंकि वह काम करने का दिन नहीं था, इसलिए उस महिला का पति अपनी आदत के अनुसार एक होटल में अपने मित्रों के साथ दोपहर बाद जुआ खेल रहा था। वह बातचीत करना चाहता था, परन्तु वह एक ऐसी आत्मा के वश में था जिससे मनुष्य बोलता तो बहुत है परन्तु बहुत कम कह पाता है। उसने कहा, "मेरे पास बाइबिल है।" "आप मेरी बाइबिल को अवश्य देखें। मेरी माँ ने उसे संदूक में डालकर मुझे दिया था जब मैं अपने विवाह के लिए घर से चला गया था। प्रिय, मेरी बाइबिल कहाँ है?" बहुत देर तक बाइबिल की खोज की गई परन्तु उन्हें केवल एक प्रार्थना की पुस्तक ही मिली। उसे बाइबिल कभी नहीं मिली।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

161

परन्तु शराब उसकी समस्याओं में से एक थी। उसी तरह जुआ भी उसे बर्बाद कर रहा था, और वह अत्यधिक धूम्रपान का आदि था। इन, और दूसरी आदतों ने उसके और उसकी पत्नी के बीच की दूरी को और बढ़ा दिया था। उसकी पत्नी ने अपना सामान बांध लिया और वह घर छोड़ने के लिए तैयार थी। वे अलग होने की योजना बना रहे थे। सब कुछ बुरा हो रहा था। परन्तु उस व्यक्ति के हृदय में अच्छा बनने की प्रबल इच्छा थी जिसे शराब भी नहीं डुबा सकती थी। यहाँ तक कि नशीली शराब भी उसे डुबा नहीं सकती थी। उस प्रचारक ने सोमवार की शाम को उससे दुबारा मिलने का समय निश्चित किया, और उस समय, साप्ताहिक बाइबिल अध्ययन का क्रम आरंभ हुआ।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

162

हर सप्ताह, जैसे ही परमेश्वर के वचन से प्रसंग बताए गए, वैसे ही क्रूस की शक्ति ने अपना कार्य आरंभ कर दिया। मसीह, अपने पवित्र आत्मा के द्वारा एक और घर में प्रवेश कर रहे थे। वह शाम अनोखी थी जब उस व्यक्ति ने कहा, "आपको आज रात थोड़ी देर अवश्य रुकना चाहिए। मेरी पत्नी अब सोने जायेगी। क्या आप और मैं आमने - सामने थोड़ी बातचीत कर सकते हैं?"

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

163

तब उसने प्रचारक को अपने जीवन की दु:खद कथा सुनायी जिसका आरम्भ अच्छी तरह हुआ था। उसका जन्म एक विश्वस्त मसीही परिवार में हुआ था पर उसने जवानी में नियत्रंण खो दिया था और उड़ाऊ पुत्र के समान गलत मार्ग पर चल पड़ा था - ऐसा मार्गजिसके गडड़े गहरे हैं और जो दूर देश को जाता है। कलीसिया को भुला दिया गया, बाइबिल को अनदेखा। मसीह को केवल अनावश्यक प्रतिज्ञाओं में स्मरण किया जाता था। "परन्तु मैं क्या जानना चाहता हूँ प्रचारक, आपने मेरे लिए क्या किया है? मेरे पास एक शराब भी नहीं थी या अब चार सप्ताह के लिए एक शर्त लगाना था। न ही उस समय मैंने परमेश्वर का नाम व्यर्थ लिया।" तब जैसे ही उसने चूल्हे में आधी -जली हुई सिगरेट को डाला, वह चला गया।"मेरी सिगरटे मेरे लिए बेस्वाद हो गई। मैं जानता हूँ कि मैं उसे छोड़ना चाहता हूँ। परन्तु यह इन सब से अधिक महान आश्चर्य की बात है। मेरी पत्नी ने अपना सामान खोला। उसने यह कार्य अब से तीन सप्ताह पहले ही कर लिया था। इस सुबह वह मेरे पीछे दरवाजे तक आई, इतने वर्षो में पहली बार, उसने मुझे चूमकर नमस्कार किया। हाँ, उसने किया। मैं

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

आश्चर्यचकित रह गया, प्रचारक, मैं और अधिक विस्मित हो गया जब उसने मेरे सामने मुस्कुराई और कहा, "मैं नए जैक को पसन्द करती हूँ।" अब मेरे साथ क्या हुआ? मैं इससे निश्चित हूँ कि यह बात हमारे सोमवार शाम के बाइबिल अध्ययन से संबधित है।"

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

164

उस प्रचारक ने कहा, "मैंने व्यक्तिगत तौर पर मैंने कुछ नहीं किया, परन्तु मैं विश्वास करता हूँ कि बाइबिल ये सब कुछ स्पष्ट कर सकती है।"

फिर, उसने २ कुरिन्थियों ५ : १७ निकाला और उसने पढ़ना शुरू किया: "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई; देखो, व सब नई हो गई।" अब नये जैक ने धीरे से अपने लिए उस पद को पढ़ा। "एक नया प्राणी - एक नया जैक! वह यह है! एक नया जैक! और यदि आप मुझे जानते थे, प्रचारक, तो आज रात मैं बिलकुल वैसा ही हूँ। हाँ, मित्रो, यीशु मसीह परमेश्वर के स्वर्गीय पुत्र है, और केवल उसी के पास स्त्रियों और पुरुषों को बदलने की शक्ति है। यह यीशु आप का भी जीवन बदलना चाहते है। आप कमजोरी अनुभव कर सकते हैं परन्तु यीशु शक्तिशाली है। भूतकाल में आपने जो कुछ किया कोई बात नहीं, यीशु आपको माफ कर देगें और साफ कर देगें। वह आपको नया जीवन जीने के लिए अपनी शक्ति दे देगें। कोई भी चीज आप को रोक न सकेगी। यीशु बुला रहे हैं। वह घर आने के लिए बुला रहे हैं। क्या आप अपने को दोषी मानकर घुटने टेकते हैं और कहते हैं, '"प्रभु, हाँ, मैं आ रहा हूँ?" इसी समय अपने घुटने

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

टेकिए। श्रोतागणों को भूल जाइए! जब आप घुटने के बल हों केवल यीशु के विषय में सोचिए। कहिए, यीशु, मैं आ रहा हूँ। मैं अभी आ रहा हूँ।" आइए प्रार्थना करें।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?